एक विशेष विद्यालय का समावेशी विद्यालय बनना

आर लालमाछुआनी

किसी भी बच्चे को धीमी गति से सीखने वाला या ज़िद्दी कहना उचित नहीं है। साथ ही, शिक्षक द्वारा ऐसी शिक्षण प्रक्रियाओं का उपयोग करना अर्थपूर्ण रहता है जिनमें लचीलापन हो, ताकि पढ़ाने के सिर्फ़ एक ही तरीक़े पर निर्भर न रहना पड़े। यह मुश्किल लग सकता है, लेकिन थोड़े से अधिक प्रयास और धैर्य के साथ काम करने से यह आसान होने लगता है और हम बच्चे के उस आत्मविश्वास को सहेज पाते हैं जिसकी सीखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

भारत में केरल के बाद मिज़ोरम राज्य की साक्षरता दर दूसरे स्थान पर है। मिज़ो समाज 'त्लावमंगइह्ना' नामक आचार संहिता पर आधारित है, जहाँ हर किसी से मेहमाननवाज़ी, दयालुता, निःस्वार्थता और दूसरों की मदद करने की उम्मीद की जाती है।

मैंने 2018 में सुनने की अक्षमता वाले बच्चों के लिए एक विशेष विद्यालय की शुरुआत की। पहले बैच में 2.5 से 6 वर्ष की आयु के सिर्फ़ 10 विद्यार्थी थे और ये बच्चे शाला पूर्व या प्री-स्कूल वाले थे। ऐसे स्कूल की आवश्यकता उन श्रवण बाधित बच्चों के अभिभावकों द्वारा महसूस की गई, जिन्हें मैं स्पीच थेरेपी दे रही थी। ये बच्चे शैक्षिक और भावनात्मक कठिनाइयों के कारण उन स्कूलों को छोड़ रहे थे जहाँ विशेष ज़रूरत के बच्चे अन्य बच्चों के साथ पढ़ते थे। 5 वर्षीय सोमा एक ऐसा ही बच्चा था।

सोमा को बहुत कम सुनाई देता है और उसे सीखने में भी कठिनाई होती है। वह 2.5 साल से हियरिंग एड (सुनने की मशीन) पहन रहा है और नियमित रूप से स्पीच थेरेपी भी ले रहा है, जिससे उसके भाषा कौशल में सुधार हुआ है। सोमा के माता-पिता ने उससे बड़ी उम्मीदें लगा रखी थीं और जब वह 4 साल का हुआ तो उसे पुन: उसी स्कूल में दाख़िला दिला दिया। सोमा वहाँ जाने के लिए बहुत उत्साहित और ख़ुश था। लेकिन उसे अपने गृहकार्य और मौखिक रूप से अपनी बात कहने में सहायता की आवश्यकता पड़ती थी, जो उसके शिक्षक नहीं दे पाते थे। इससे सोमा की प्रगति में बाधा आई। उसके शिक्षक ने स्कूल के बाद उपचारात्मक कक्षाओं का सुझाव दिया, लेकिन

चित्र 1: अपनी-अपनी पसन्द की बड़े चित्रों वाली किताबों को पलटते बच्चे

उसके माता-पिता को लगा कि वह मुख्यधारा के स्कूल में ठीक से फ़िट नहीं हो पा रहा है और तब उन्होंने उसे हमारे विशेष स्कूल में दाख़िला दिलाने का फ़ैसला किया। लगातार स्पीच थेरेपी और सहायता के मिलने से सोमा ने अपना खोया हुआ आत्मविश्वास वापस पा लिया।

प्री-स्कूल के 10 विद्यार्थियों के पहले बैच ने उल्लेखनीय प्रगति की, उन सभी ने हियरिंग एड पहने और उन्हें रोज़ स्पीच थेरेपी दी जाती थी। साथ ही, एक स्कूल के रूप में हमारी 'समावेशन' सम्बन्धी समझ भी बढ़ती जा रही थी। 'समावेशन' शब्द नियमित शिक्षकों और विशेष शिक्षकों दोनों को सतर्क कर देता है, क्योंकि इसे लागू करना असम्भव लगता है। हमें भी इस बात पर आश्चर्य होता था कि उन स्कूलों में समावेशन का प्रभावी ढंग से पालन कैसे किया जाता है जो समावेशी होने का दावा करते हैं। प्रारम्भ में हमने समावेशन को मुख्य रूप से विकलांग बच्चों के समावेशन से जोड़ा था, लेकिन फिर हमने जाना कि समावेशन यानी सभी बच्चों को शामिल करना, फिर चाहे उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि, शारीरिक या बौद्धिक क्षमताएँ, भावनात्मक स्वास्थ्य, आर्थिक स्थिति आदि कुछ भी क्यों न हो। हमने महसूस किया कि कई शिक्षक पहले से ही अनजाने में समावेशन का पालन करते हैं। उदाहरण के लिए, कक्षा में प्रकाश को इस तरह से समायोजित करना कि बच्चे ब्लैकबोर्ड को स्पष्ट रूप से देख सकें। शिक्षक द्वारा ऐसा करना समावेशन का कार्य ही तो है।

इस बढ़ती समझ के साथ हमने अप्रैल 2024 में अपने स्कूल के दरवाज़े सभी बच्चों के लिए खोल दिए। तेरह विद्यार्थियों को प्री-स्कूल में नामांकित किया गया, जिनमें एक श्रवण दोष वाला, एक ध्वनि, वाणी दोष वाला (Cleft lip and cleft palate), एक गुदा एट्रेसिया वाला में जन्म से मौजूद रुकावट या ग़ायबी की स्थिति (Anal atresia) है। तीन कम सामाजिक बुद्धिमत्ता वाले और सात विद्यार्थी सामान्य थे। समाज में विकलांगता से जुड़ी भावनात्मक बाधाओं और कलंक के कारण समावेशी प्री-स्कूल खोलना एक महत्त्वपूर्ण और चुनौतीभरा प्रयास था।

हमारे प्री-स्कूल को और अधिक समावेशी बनाने में तीन 'उपकरण' विशेष रूप से सहायक रहे हैं।

1. **सीखने के लिए सार्वभौमिक डिज़ाइन (यूडीएल)**[1] : यूडीएल सीखने के माहौल की डिज़ाइन का मार्गदर्शन करने के लिए एक रूपरेखा है जो हर शिक्षार्थी के लिए सुलभ, समावेशी, न्यायसंगत और चुनौतीपूर्ण है। यूडीएल का आधार यह है कि शिक्षार्थी की कथित कमी को समस्या के रूप में देखने की बजाय वातावरण की डिज़ाइन को बदलना चाहिए। आइए, इसे 6 वर्षीय टिमोथी के उदाहरण से बेहतर तरीक़े से समझते हैं। टिमोथी को उन कार्यों को पूरा करने में एक घण्टे का समय लगता था जिन्हें उसके सहपाठी 15 मिनट में पूरा कर लेते थे। वह पढ़ाई से बचने के लिए बहाने बनाता था और लिखने के लिए कुछ मिनट भी स्थिर नहीं बैठ पाता था। टिमोथी के शिक्षक ने उसके माता-पिता को स्कूल बुलाया और इन बातों के बारे में बताया, साथ ही यह भी बताया कि कैसे टिमोथी अभी भी अक्षरों और संख्याओं को नहीं पहचान पाता है और उसकी लिखावट भी ख़राब है। मज़े की बात

चित्र 2 : अपनी बनाई रोटी को देखती बच्ची

यह थी कि टिमोथी के माता-पिता ने बताया कि वह घर पर हमेशा बहुत व्यस्त रहता था, ख़ाली बोतलों और कार्डबोर्ड बॉक्स जैसी कबाड़ सामग्री का उपयोग करके खिलौना-घर और अन्य चीज़ें बनाता था। इस बातचीत से शिक्षक को सुखद आश्चर्य हुआ और तब उन्होंने अपनी कार्ययोजना में बदलाव किया। उन्होंने क़लम और काग़ज़ से सम्बन्धित कामों को कम कर दिया और खेल-गतिविधियों पर अधिक ध्यान देना शुरू किया, जैसे कि फोम शीट का उपयोग करके अक्षरों और संख्याओं को काटना और चिपकाना। साथ ही उन्होंने टिमोथी से कहना शुरू किया कि जब भी वह बाहर जाए तो विज्ञापनों और साइनबोर्ड पर लिखे अक्षरों पर ध्यान दे। टिमोथी के माता-पिता और शिक्षक ने देखा कि तरीक़े में बदलाव करने से अक्षरों और संख्याओं में उसकी रुचि बढ़ने लगी।

2. **फ़ाउण्डेशनल स्टेज के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (एनसीएफ-एफएस) 2022** : *एनसीएफ-एफएस* फ़ाउण्डेशनल स्टेज के लिए पाठ्यचर्या का इस प्रकार का पहला ढाँचा है और यह समानता और समावेशन के सिद्धान्त पर बनाया गया है। इसमें विकास के विभिन्न क्षेत्रों में सीखने के परिणामों के लिए सुझाए गए तरीक़ों में समावेशी सामग्री चयन, शिक्षण, आकलन और सीखने के माहौल के लिए दिशानिर्देश शामिल हैं जो प्रारम्भिक बचपन की शिक्षा में समावेशन का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

लोमा 4 साल का था और उसे जंक फूड बहुत पसन्द था, लेकिन उसे घर का बना पौष्टिक खाना बिलकुल अच्छा नहीं लगता था। स्थिति के गम्भीर होने के कारण लोमा के माता-पिता ने एक व्यावसायिक चिकित्सक की मदद ली, जिन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि लोमा को यह बात अच्छी नहीं लगती थी कि घर पर पकाए गए भोजन के बारे में उससे कुछ नहीं पूछा जाता था।

स्कूल में लोमा के शिक्षकों ने सीखने के जिस परिणाम पर ध्यान देना शुरू किया, वह था– 'पौष्टिक भोजन के प्रति रुचि और समझ दिखाना तथा भोजन बर्बाद न करना।' उन्होंने साप्ताहिक टिफ़िन की सूची बनाने में बच्चों की मदद ली। भोजन के समय, बच्चों को एक साथ बैठने और एक दूसरे के साथ अपना टिफ़िन साझा करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। ऐसा करने से न केवल लोमा को बल्कि कक्षा के अन्य सभी विद्यार्थियों को नए-नए तरह के पौष्टिक भोजन का स्वाद मिला और वे उसे खाने के लिए प्रोत्साहित हुए, जिसका लाभ भी उन्हें मिला।

3. **बाल गतिविधि मैट्रिक्स** : गतिविधि मैट्रिक्स एक दृश्य उपकरण है जो पूरे स्कूल के दौरान शिक्षण-अधिगम के अवसरों को आयोजित करने में सहायक है। कक्षा की दिनचर्या को पहले कॉलम में सूचीबद्ध किया जाता है और विद्यार्थियों के नाम जिन्हें विशिष्ट सहायता की आवश्यकता होती है, सबसे ऊपर वाली पंक्ति में होते हैं। परिणामी मैट्रिक्स का उपयोग प्रत्येक बच्चे हेतु विशिष्ट लक्ष्यों को सूचीबद्ध करने के लिए किया जाता है। इस उपकरण का उपयोग शिक्षक और माता-पिता दोनों के द्वारा यह पहचानने के लिए किया जा सकता है कि बच्चे को कहाँ और कैसी सहायता की आवश्यकता है और उसे यह सहायता कब और कैसे प्रदान करनी है।

तालिका 1 : तीन बच्चों– सोमा, टिमोथी और लोमा के लिए गतिविधि मैट्रिक्स।

गतिविधि	सोमा (5 वर्ष)	टिमोथी (6 वर्ष)	लोमा (4 वर्ष)
सुबह की सभा	साथियों और शिक्षकों का अभिवादन करना	चुपचाप बैठने के समय के दौरान 3 मिनट तक स्थिर बैठना	
सर्कल टाइम	कम्युनिकेशन (संचार) बोर्ड का उपयोग करना	साथियों के साथ नए मॉडल / नई संरचना को साझा करना	अगली साप्ताहिक टिफ़िन योजना के लिए अधिक खाद्य पदार्थों का सुझाव देना
कथा समय	कहानी सुनाते समय इस्तेमाल किए गए चित्रों पर ध्यान देना		खान-पान की आदतों के बारे में कहानी पर आधारित चिन्तनशील प्रश्नों के उत्तर देना
बाहर की गतिविधि	शारीरिक संकेतों का उपयोग करके सहकारी खेल खेलना	रेत के ढेर में अक्षरों को ट्रेस करना	
टिफ़िन का समय	बुनियादी इशारों का उपयोग करके चीज़ों का अनुरोध करना		साथियों के साथ टिफ़िन साझा करना
उभरती साक्षरता	तीन पैनलों के कहानी कार्डों को क्रमबद्ध करना	फोम शीट से अक्षरों को काटना और उन्हें दीवार पर क्रम से चिपकाना	
संवेदी खेल	विभिन्न वस्तुओं (संगीत वाद्य यंत्रों सहित) का उपयोग करके कम्पन का पता लगाना	अक्षर और संख्या इनसेट पज़ल्स के साथ खेलना बेकार सामग्री का संग्रह करना और उनके उपयोग से नई चीज़ें बनाना	
छुट्टी का समय	साथियों से विदा लेना		

अँग्रेज़ी से नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।

[1]https://www.cast.org/impact/universal–design–for–learning–udl पर देखें यूनिवर्सल डिज़ाइन फॉर लर्निंग और इसके सिद्धान्तों के बारे में।

आर लालमाछुआनी एक ऑडियोलॉजिस्ट और स्पीच थेरेपिस्ट हैं। साथ ही, वे मिज़ोरम के आइज़ोल में रिडीम गार्डन निजी स्कूल में प्रिंसिपल हैं।

सम्पर्क : teichhuantei@gmail.com